शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2023
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सूरदास के काव्य में श्रीकृष्ण-उपासना

विजयलक्ष्मी अग्रवाल (शोधार्थी)
डॉ. अवधेश कुमार जौहरी (शोध निर्देशक)
संगम विश्वविद्यालय
भीलवाड़ा, राजस्थान, भारत

"कृष्ण भक्ति की अजस्र धारा को प्रवाहित करने वाले भक्त कवियों में सूरदास का नाम सर्वोपरि है। हिन्दी साहित्य में भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य उपासक और ब्रजभाषा के श्रेष्ठ कवि महात्मा सूरदास हिन्दी साहित्य के सूर्य माने जाते हैं।'

हिन्दी साहित्याकाश में सगुणोपासक कृष्ण भक्त कवियों की परम्परा में सूरदास का स्थान अनन्य है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में, "जिस प्रकार रामचरित का गान करने वाले कवियों में गोस्वामी तुलसीदास जी का स्थान सर्वश्रेष्ठ है, उसी प्रकार कृष्ण चरित गाने वाले भक्त कवियों में महात्मा सूरदास का। वास्तव में ये हिन्दी काव्य गगन के सूर्य और चन्द्र हैं। जो तन्मयता इन दोनों भक्त शिरोमणि कवियों की वाणी में पायी जाती है वह अन्य कवियों में कहाँ ? हिन्दी काव्य इन्हीं के प्रभाव से अमर हुआ इन्हीं की सरसता से उसका स्रोत सूखने न पाया। सूर की स्तुति में एक संस्कृत श्लोक के भाव को लेकर यह दोहा कहा गया है कि -

"उत्तम पद कवि गंग के, कविता को बलबीर।
केशव अर्थ गंभीर को, सूर तीन गुन धीर।।'

इसी प्रकार सूरदास की प्रशस्ति में कवि ने यह भी कहा है कि -

"किधौं सूर को सर लग्यो, किधौं सूर को पीर।
किधौं सूर को पद लग्यों, बेध्यो सकल सरीर।।"

महात्मा सूरदास, वल्लभाचार्य की शिष्य-परम्परा में उनके पुत्र विट्ठलनाथ द्वारा प्रतिष्ठित 'अष्टछाप' के कवियों में सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। विद्वानों का मत है कि सूरदास का जन्म दिल्ली के निकट बल्लभगढ़ से 2 मील दूर साही नामक गांव में सन् 1478 के आस-पास एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। किशोरावस्था में ही विरक्त होकर ये मथुरा चले गये और आगरा-मथुरा के बीच गौघाट पर साधु के रूप में रहने लगे। यहीं महाप्रभु वल्लभाचार्य जी ने इन्हें दीक्षा प्रदान की, जिनकी आज्ञा से सूरदास जी ने श्रीमद्भागवत के आधार पर कृष्णलीला का विस्तारपर्वूक पद्यशैली में गायन किया। सूरदास जी के अंधत्व को लेकर विद्वानों में मतभेद हैं।

उन्होंने अपनी रचनाओं में बालकों की स्वाभाविक चेष्टाओं तथा प्राकृतिक सौन्दर्य, दृश्यों का जैसा सजीव और यथार्थ चित्रण किया है और रंगरूप की जो परिकल्पनाएं की हैं, उसके आधार पर उनका जन्मांध होना असंभव-सा प्रतीत होता है। सूरदास का देहावसान सन् 1583 के लगभग हुआ।

"सूरदास जी का वृत्त 'चौरासी वैष्णवों की वार्ता' में केवल इतना ज्ञात होता है कि पहले गौघाट पर एक साधु या स्वामी के रूप में रहा करते थे। गोवर्द्धन पर श्रीनाथ जी का मंदिर बन जाने के पीछे एक बार बल्लभाचार्य जी गौघाट पर उतरे

तब सूरदास उनके दर्शन को आये और उन्हें अपना बनाया एक पद गाकर सुनाया।"

महाकवि सूरदास श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे। कृष्ण के मनोहरी रूपों का वर्णन करते हुए आपके काव्य में वात्सल्य श्रृंगार एवं भक्ति की त्रिवेणी प्रवाहित होती दिखाई पड़ती है। बाल लीला के वर्णन में जैसी तन्मयता आपकी वाणी में मिलती है, वैसी अन्यत्र दुलर्भ है। वैसे तो इनके काव्य में सभी रसों का समावेश हुआ है किन्तु वात्सल्य एवं श्रृंगार की प्रधानता है। सूरदास ने वात्सल्य का कोना-कोना झांका है तथा संयोग और वियोग दोनों प्रकार के श्रृंगार का वर्णन किया है।

रचनाएँ

सूरदास द्वारा रचित ग्रंथ हैं - 'सूरदास', 'सूरसारावली' और 'साहित्य लहरी'।

सूरसागर

सूरसागर के वर्ण्य विषय का आधार 'श्रीमद्भागवत' है। भक्ति को भव्य एवं उदात्त रूप में चित्रित करते समय श्रृंगार और माधुर्य का जैसा वर्णन सूर ने अपने सूरसागर में ब्रजभाषा में किया है, वैसा उनसे पूर्व किसी लोकभाषा में नहीं हुआ है। सूरसागर का सर्वाधिक मर्मस्पर्शी अंश भ्रमरगीत है जिसमें गोपियों की वाकपटुता अत्यन्त मनोहारिणी है। कहा जाता है कि इनके पदों की संख्या सवा लाख थी, जिसमें गोपियों की वाकपटुता में से अब केवल 10 हजार पद ही मिलते हैं। सूरसागर के पद गेयता से युक्त हैं, जिन्हें भक्त बड़ी तन्मयता से गाते हैं।

सूर सारावली

विद्वानों ने इस ग्रन्थ को विवादास्पद माना है तथापि रचना शैली, विषय-वस्तु, भाषा भाव, सभी दृष्टियों से यह सूरदास की प्रमाणिक रचना है। इसमें 1107 छन्द हैं।

साहित्य लहरी

इस ग्रन्थ में सूरदास के 'दृष्टकूट' पद सकंलित हैं, जिनकी संख्या 118 है। रीतिशास्त्र का विवेचन भी इन पदों में मिलता है। विशेष रूप से नायिका भेद और अलंकार निरूपण इस ग्रन्थ की विषय वस्तु है। कहीं-कहीं श्रीकृष्ण की बाल लीला से संबंधित पद भी मिलते हैं। महाभारत के कुछ प्रसंग भी साहित्य लहरी में वर्णित हैं।

भावपक्ष

महाकवि सूरदास, श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे। कृष्ण के मनोहारी रूपों का वर्णन करते हुए आपके काव्य में वात्सल्य श्रृंगार एवं भक्ति की त्रिवेणी प्रवाहित होती दिखाई होती है। बाललीला के वर्णन में जैसी तन्मयता आपकी वाणी में मिलती है, वैसी अन्यत्र दुलर्भ है। वैसे तो इनके काव्य में सभी रसों का समावेश हुआ है किन्तु वात्सल्य एवं श्रृंगार की प्रधानता है। इन्होंने वात्सल्य का कोना-कोना झांका है तथा संयोग और वियोग दोनों प्रकार के श्रृंगार का वर्णन किया है।

कला पक्ष

सूरदास जी ने माधुर्यमयी ब्रजभाषा में अपने साहित्य की रचना की है, जो बहुत ही सरस है। भाषा साहित्यिक होते हुए भी बोलचाल की भाषा के बहुत निकट है। इन्होंने अपने काव्य में मुक्तक शैली का प्रयोग किया है। किसी भी पद का दूसरे पद से कोई संबंध नहीं है। सूरदास जी ने गेयपद शैली को अपनाया है। सभी प्रमुख अलंकार सूर के काव्य में उपलब्ध हैं। उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, अनुप्रास, यमक, श्लेष आदि अलंकार बड़े ही स्वाभाविक रूप से सूर के काव्य का रूपक श्रृंगार करते हैं। सूरदास जी हिन्दी काव्य जगत के दैदीप्यमान नक्षत्र हैं। वे भक्तिकाल की कृष्णाश्रयी सगुण भक्तिशाखा के

प्रतिनिधि कवि हैं। अष्टछाप कवियों में आपका प्रमुख स्थान है। वे वात्सल्य रस के चित्रण में अद्‌वितीय हैं। इसी कारण से उन्हें वात्सल्य रस के सम्राट की उपाधि से विभूषित किया गया है।

सूरदास की काव्य एवं काव्यगत विशेषताएं

सगुण के उपासक

सूर की उपासना ईश्वर के सगुण-साकार रूप की है। ईश्वर के निराकार निर्गुण रूप का वर्णन ही बहुत कठिन है उनकी उपासना न जाने कैसी होगी ? सूर ने अपनी सगुण उपासना का कारण इस प्रकार से बताया है कि मन को प्रभावित कर सके। निर्गुण ब्रह्म इन्द्रियातीत है, मन और वाणी के परे है, इसलिए सूरदास सगुण कृष्ण लीलाओं का गान करते हैं।

लीला पुरूषोत्तम कृष्ण की भक्ति

सूर के इष्टदेव कृष्ण लीला पुरूषोत्तम हैं। वे राम के समान मर्यादा पुरूषोत्तम नहीं हैं। कृष्ण ने ब्रज की गोपियों के साथ रास रचाया और प्रेम किया। सूर के कृष्ण खेल में हार जाने पर भी अपनी हार स्वीकार नहीं करते और सखाओं को दांव देने में आनाकानी करते हैं। इस अवसर का वर्णन करने वाला पद इस प्रकार है :

"खेलत में को काकौ गुसैयाँ।
हरि हारे जीते श्रीदास बरबस ही कत करत रिसैयाँ।।"

सूर का वात्सल्य वर्णन

सूर वात्सल्य रस के सम्राट कहे जाते हैं। सूर ने अपनी अंधी आंखों से बालक की जितनी क्रियाएं देखी हैं, उतनी आंखों वाले कवि भी नहीं देख पाते हैं। सूर वात्सल्य रस का कोना-कोना झांक आये हैं। सूर का हृदय सबसे अधिक कृष्ण की बाल लीलाओं के वर्णन में ही रमा है। सूर ने वात्सल्य के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का सुन्दर चित्रण किया है।

सूर की भाषा

ब्रज प्रदेश सूरदास की ईष्ट देव कृष्ण की लीला भूमि है। सूर भी जीवन भर प्रदेश में ही रहे हैं। इस कारण ब्रज क्षेत्र की भाषा ब्रज भाषा में काव्य रचना सूर की विवशता थी। सूर की ब्रजभाषा जनसाधारण की बोलचाल की ब्रजभाषा है। ब्रजभाषा में भाव प्रकाशन की अद्भुत क्षमता और माधुर्य का परिचय पहली बार सूर की कविता के माध्यम से ही हुआ।

सूर के काव्य में वात्सल्य

सूरदास ने यद्‌यपि सूरसागर में कृष्ण के जीवन चरित्र को आधार बनाकर पद रचना की है, पर उनका मन कृष्ण की बाल लीलाओं में अधिक रमा है। सूर ने कृष्ण की लीलाओं का वर्णन करके उन्हें देखने वाले माता-पिता अर्थात यशोदा और नंद के मन में उमड़ने वाले प्रेम-भाव एवं अनुभव होने वाले आनंद का भी वर्णन किया है। संतान एवं संतान की क्रीड़ाओं को देखकर माता-पिता के मन में उमड़ने वाला प्रेम साहित्य में वात्सल्य कहा जाता है अर्थात वात्सल्य भाव प्रेम का वह प्रकार है जिसमें किसी छोटे बालक के प्रति निश्छल एवं निष्कपट प्रेम की भावना रहती है। यही कारण है कि वात्सल्य को प्रेम की अत्यन्त निर्मल एवं पवित्र स्थिति कहा जा सकता है।

इस तरह सूर ने वात्सल्य का बड़ा ही हृदयग्राही वर्णन किया है। सूर के वात्सल्य वर्णन में तन्मयता है, स्वाभाविकता है, मनोवैज्ञानिकता है, सहजता है, सरलता है और सहृदय को आकृष्ट करने की पूर्ण क्षमता है। सूर ने केवल बाल-लीलाओं का चित्रण ही नहीं बल्कि बालकों की

मानसिक प्रवृत्ति का भी मार्मिक वर्णन किया है। निश्चय ही सूर का वात्सल्य वर्णन हिन्दी साहित्य की अपूर्व निधि है। जिस पर हम गर्व कर सकते हैं।

सच तो यह है कि विश्व साहित्य में कहीं भी उनकी टक्कर का वात्सल्य वर्णन उपलब्ध ही नहीं है। आचार्यों को वात्सल्य रस के रूप में एक नवीन रस को मान्यता देना पड़ी है। सूरदास जी के इस वात्सल्य वर्णन पर टिप्पणी करते हुए डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैं कि "यशोदा के बहाने सूरदास ने मातृ ह्रदय का ऐसा स्वाभाविक, सरल और हृदयग्राही चित्र खींचा है कि आश्चर्य होता है।"

सूर ने वात्सल्य वर्णन में शिशु जीवन की उल्लास एवं उमंग भरी शाश्वत अंकित की है। वे बाल - मनोविज्ञान के पारखी माने जाते हैं और बाल प्रकृति एवं बाल-मनोवृत्तियों के कुशल चितेरे के रूप में प्रसिद्ध हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उनके वात्सल्य वर्णन की व्यापकता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है - "सूरदास अपनी बंद आंखों से वात्सल्य का कोना-कोना झांक आए हैं।"

सूरदास ने वल्लभाचार्य की प्रेरणा से कृष्ण की विविध लीलाओं का वर्णन किया और पुष्टिमार्ग के अष्टछाप के कवियों में स्थान बना लिया। सूर के आराध्य कृष्ण थे। वे उनसे अपना सखा भाव मानते थे।

" मैया मैं तो चन्द्र खिलौना लैहो।
जैहों लोटि धरनि पर अबही, तेरी गोद न ऐहो।"

हिन्दी के सबसे समर्थ समीक्षक पं. रामचन्द्र शुक्ल की इस सबंधं में यह उक्ति सर्वथा सत्य ही है - "हिन्दी साहित्य में श्रृंगार का रसराजत्व यदि किसी ने पूर्ण रूप से दिखाया है, तो सूर ने।"

निष्कर्ष

वस्तुतः निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि सूरदास एक उच्च कोटि के भक्त कवि हैं तथा उनकी भक्ति भावना में पुष्टिमार्गीय भक्ति की प्रधानता है। सूरदास अपने पदों में सखा भाव की भक्ति को अपनाते हुए भी वात्सल्य एवं दाम्पत्य भाव की सुन्दर अभिव्यक्ति भी है। सूरदास कृष्ण को अपना आराध्य मानतें हैं और उनके प्रति पूर्णतः समर्पित थे। वे इष्वर कृपा को ही जीव कल्याण मानते हैं। सूर ने अपने पदों के माध्यम से कृष्ण की अनेक लीलाओं का वर्णन किया है।

संदर्भ ग्रंथ

1 श्रीवास्तव, डॉ.राजेश, हिन्दी साहित्य का प्राचीन इतिहास, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल, 2016, पृष्ठ 198

2 शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, कमल प्रकाशन नई दिल्ली, 1997 पृष्ठ 116

3 www.hindi-web.com कृष्ण चलना सीखना लीला इल सूरदास

4 www.kavitakosh.org कविता कोश - सूरदास के पद

5 www.hindisahityadarpan.in हिन्दी साहित्य मार्गदर्शन, मैंया मोरी मैं नहीं माखन खायो - सूरदास।

6 शुक्ल आचार्य रामचन्द्र हिन्दी साहित्य का इतिहास, कमल प्रकाशन नई दिल्ली, 1997 पृष्ठ 124